हमारी बात

मार्च 1988 में 'सबला' का पहला अंक प्रकाशित हुआ। उद्देश्य था कमज़ोर बहनों, विशेषकर गांवों की बहनों को घर-बाहर, क़ानून-व्यवहार, ज्ञान-विज्ञान आदि की जानकारी देना, उनमें नई सूझ-बूझ पैदा करना, उनके दिलों में उमंग भरना और उनमें अन्याय व जुल्म का विरोध करने की ताक़त भरना।

'सबला' के पहले अंक में सुश्री कमला भसीन ने अपने लेख "ख़ामोशी तोड़ो वक्त आ गया" में लिखा था कि ग्रामीण बहनों की आवाज़ बुलंद करने के लिए 'सबला' की शुरूआत की जा रही है। दिल्ली विश्वविद्यालय के एक छात्र ने "लंबे सफ़र का पहला क़दम" लेख में अपना विचार व्यक्त करते हुए लिखा... जिन्हें लगता है औरतों में नई चेतना आनी चाहिए... जो बहनें अभी सोई हैं, उन्हें शताब्दियों की लंबी नींद से जगाने के लिए यह पत्रिका (सबला) आई है। 'सबला' के संपादक मंडल ने इन्हीं उद्देश्यों को सामने रख लगभग साठ अंक प्रकाशित किए और भरसक कोशिश की कि इस लंबे सफ़र में ध्यान इधर-उधर न भटक जाए।

"रास्ता है लंबा बहन मंज़िल है दूर"

एक-डेढ़ साल के लिए 'सबला' अज्ञातवास में चली गई और अब फिर नए उत्साह व नई उमंग लिए वापिस लौट आई है। इसका श्रेय है 'जागोरी' समूह को जिसने 'सबला' को अज्ञातवास से बाहर निकाल, उसे नया जीवन दिया। हमें पूरा विश्वास है कि 'सबला' की पाठक बहनें हमारे साथ एक स्वर में मिल कर कहेंगी :

हममें हिम्मत, हममें ताक़त
हममें पूरा दम है
कोई बता दे औरत जाति
मर्दों से क्या कम है।

(कमला भसीन)

शारदा जैन